नाः प्रकाशः) Jogas. 1, 36. ेमती त्रिष्ट्य diejenige Form der Trishtubh, welche drei Pada mit je 12 und einen mit 8 Silben hat. Je nach der Stellung des letzteren heisst sie पुरस्ताङ्यातिस् मध्ये oder उपर्शाः प्राः ज्ञातिस् (darnach ist der Artikel उपश्चिः प्राः प्रः प्राः प्रः प्राः प्रः प्राः प्रः प्राः प्रः प्राः प्रः प्राः प्रः प्राः प्राः

ड्यातिस् (von ज्यूत्) U n. 2, 106. f. n. Taik. 3,5, 20. 1) n. a) Licht, Helle, Schein (Gegens. तमस्) der Sonne, Morgenröthe, des Feuers, Blitzes, Himmels, Tages u. s. w.; auch pl. AK. 3,4,20,232. H. 99. an. 2,580. Мво. s. 21. उत्सूर्ये। ड्योतिषा देव एति к. V. 4,13,1. 1,124,1. AV. 12,1, 15. राज्यां तमा स्रदेधुर्बोतिरर्हन् .kv. 10,68,11. इदं श्रेष्ठं ब्योतियां ब्याति-रागात् die Ushas 1,113,1. 92,4. ज्यातीर्वाप (म्रग्ने:) 8,44,17. रार्ट्सो ज्या-तिषा विक्रिरातनात् २,17,4. 1,87,10. 3,2,3. 6,9,4. यद्याग्रिरिन्धनैरिह्ना मक्डियातिः प्रकाशते MBs. 14, 1154. विद्युतः R.V. 7,33,10. AV. 4,10, 1. प्रभातरलं ड्योतिः so v. a. Blitz Çâk. 25. एकं ड्योतिः ein einzelner Blitzstrahl 126. तं ड्योतिषा वि तमी ववर्ष R.V. 1,91,22. गूळकुं ड्योतिः पित-रे। म्रन्वंविन्दन् 7, 76, 4. 4, 1, 14. 3, 34, 4. व्यंवाते ज्यातिरभूद्प बत्तमी मञ्जामीत् AV. 8,1,21. des Auges, sowohl von der Sehkraft als auch von dem Glanze, den das Auge ausstrahlt: ड्रेगोतिर्न्धार्य चक्रवृर्विचत्ते RV. 1, 117, 17. ज्योति:प्रकीण blind MBH. 1, 6817. ज्योति: (ज्योति-स् = दृष्टि Auge AK. Med. = द्रिम्, soll heissen दृष्म्, H. an.) पश्यति ह्रपाणि 6853. नयनसमुत्यं ज्योतिर् त्रेरिव द्याः (ब्रधत) RAGH. 2, 75. वर्त्सी-करन्ध्रे दरशे खच्चाते इव ड्योतिषी Baig. P. 9,3,3.4.7. des Mondes im pl. ÇAT. BR. 10,4,2,2. नतत्रतारागकृनं द्योतिर्भिरवभासते R. 1,35, 16. — द्योति-र बादम् ऋप्तु ब्योतिः प्रतिष्ठितम् ब्योतिब्यापः प्रतिष्ठिताः Тытт. Up. 3, 8. वापोर्गि विकुर्वाणादिरे।चिज्जु तमानुरम्। ब्योतिहृत्यस्वते भास्वतद्रूपगुणम्-च्यते ॥ M. 1,77. ज्योतिषञ्च विक्वीणादाया रसगुणाः स्मृताः 78. ४३६५.३,७०. Buic. P.3,5,88. fgg. शब्द: स्पर्शश्च द्वपं च त्रिगुणं झ्योति ह्वच्यते MBu.12,6852. न्योतिषा चतुषा द्वयं स्पर्धे वेति च वायुना ६३४६. झ्योतिः पश्यति चतुर्भ्यान् 6849. पृथिवी वाप्राकाशमापा ज्यातिश पञ्चमम् R. 5,94,5. die drei Lichter d.i.die Erscheinung des Lichtes in den drei Weltgebieten: (प्रजापति:) त्री-िया ज्यातोंपि सचते VS. 8, 36. AV. 9,5,8. MBn. 3, 10660. personif. als Feuer, Wind, Sonne Çat. Ba. 11, 5, 8, 2. Çâñku. Ça. 16, 21, 2. Ind. St. 2, 83.303. उत्तरे ड्योतिषी Nis. 7,20.23. ड्योतिष्कर beleuchten: पद्यातिधि ज्योतिष्कृता परिवेविष्टि TBa. 2,1,2,9. — b) pl. die Gestirne AK. H. 107. H. an. Med. ड्योतिया रविर्श्मानकम् Вилс. 10,21. М. 1,38. 12,49. R. 1,60,30.31. 2,25,12. 5,31,5. Such. 1,113, 16. Çak. 165. Varah. Brh. S. 2.8. ad Hrr.I,17. ज्योतियां चेायमर्जने M. 4,108. ज्योतिर्गणाः 142. Varan. Br. s. 27,a,s. दितीयमिव चाकाशं पुष्पद्मोतिर्गणावृतम् R. 5,17,7. द्योतिरूड-मन P. 1,3,40, Vartt. 2. ड्योतिषामयनम् der Lauf der Gestirne, die Regeln

darüber, das Gjotisha Çıkshî 41. Lîți. 4,8,1. du. Sonne und Mond: ड्योतिषोप्तपर्सर्गाः auffallende Erscheinungen an Sonne und Mond Gobi. 3,3,16. द्वा त्यातिरिन्द्री die beiden Fürsten unter den Gestirnen, Sonne und Mond ÇATR. 1,28. — c) das Licht der himmlischen, ewigen Welt, diese Lichtwelt selbst (ज्योतिहत्तमम् VS. 20, 21. AV. 18, 3, 64. उत्तरम् 1, 9, 1. तृतीयम् R.V. 10, 56, 1; s. u. a): म्रमृती म्रभूमार्गन्म ज्योतिर्श्विदाम देवान् R.V. 8, 48, 3. VS. 8, 52. R.V. 9, 4, 2. ज्योतिषस्पती Mitra-Varuņa 1,23,5. मृत्तरितादिवमार्फ्हं दिवे। नार्कस्य पृष्ठात्स्वर्धितिरगामुक्म् Av. 4,14,3. VS. 17,67.72. पत्र ब्योतिर्जामं यस्मि लोके स्वर्कितम् RV.9,113, 7. मुक्ता झ्योतिषः परमे व्यीमन् 4,50,4. AV. 11, 1,37. तद्देवा झ्योतिषा झ्यो-तिरायुक्तापासते अमृतम् ÇAT. BR. 14, 7, 2, 20. — d) das Licht als das himmlische Lebensprincip in den Geschöpfen, die Intelligenz in den vernünftigen Wesen: इंद ब्योतिर्व्हर्दय माहित यत् NV. 6, 9, 6 (vgl. AV. 10, 2, 31. ÇAT. Ba. 10,6,3,2). यतप्रज्ञानेमृत चेता धृतिश्च यद्भ्योतिरत्तरमृतं प्रजाम् vs. 24, ३. म्रजस्म AV. 16, २, इ. ज्योतिषामपि तब्ब्योतिस्तमसः परम्व्यते । ज्ञानं त्तेयं त्तानगम्यं कृदि सर्वस्य धिष्ठितम् ॥ BBAG. 13, 17. यो ४ तःस्बो ४ त्तरा-रामस्तवात्तर्व्वोतिरेव यः। स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतो ऽधिगद्कृति॥ 5,24. — e) das Licht als Bild für ungehemmtes Leben, Freiheit, Freude; Hülfe, Heil, Sieg; vgl. den Gebrauch von lux und φάος, φῶς. स्रोपे ब्योतिर्श्याम् ह.v.2,27,11. स्वर्वब्ब्योतिर्भयं स्वस्ति 6,47,8. 10,36,3. 2, 28,7. उरु ब्योतिर्नशते देवपुष्टे 6,3,1. 9,91,6. 94,5. VS. 14,17. ब्योतींपि क्एवन्नवृकाणि यद्येवे RV.1,55,6. नि द्स्यूंरोक्सी म्रम मान उर्ह ज्यातिर्नु-नयनार्याय 7,5,6. 101,2. 2,11,18. जीवा ज्योतिरशीमिक् 7,32,26. कर्तारं ड्योतिः समत्स् 8,16,10. मुक्ता स्रमुन्वता वधा भूरि ड्यातीषि सुन्वतः 51,12. 15,5. 4,25,1. 9,35,1. श्रस्य देवाः प्रादेशि ज्योतिरस्त् Av. 1,9,2. प्राक्ते ड्योतिरूपेयं ते ऋ्वीक् 10,1,16. 8,5,17. म्नायुः, ड्योतिः ÇAT. Ba. 14,1,1,33. (वायुः) ड्योतिर्मुहाति देव्हिनाम् Suça. 1,261, 18. — f) so v. a. ड्योतिष्टोम, als N. des Iten und 6ten Tages des sechstägigen Abbiplava: डेपोतिगा-राप्रिति स्तामेभिर्यत्ति Air. Ba. 4, 15. उभयतोड्योतिषा षळकेन यत्ति ebend. Çat. Br. 12, 2, 2, 1. 12. 13, 5, 4, 3. TS. 7, 9, 41, 3. Açv. Çs. 12, 5. Kātj. Ça. 20,8,14. Sch. zu 1,2,12. 7,1,4. Lātj. 4,8,5. — g) bestimmte Sprüche, welche das Wort enthalten : म्रामिड्यातिस् u. s. w. Lats. 1,8,13. h) ein best. Metrum (32 Kürzen + 16 Längen) Coleba. Misc. Ess. II, 155 (4, 1). 87. Vgl. u. ड्योतिष्मस् 1. am Ende. — i) = ड्योतिष 2. H. 250. k) (wie auch die Namen für Feuer) myst. Bez. des Buchstabens 🕇 Ind. St. 2,316. - 2) m. a) Feuer. - b) die Sonne H. an. (ohne Angabe des Geschlechts). Med. Rudra bei Uggval. zu Unadis. 2, 111. — c) = A-चिका Trigonella foenum graecum Riéan. im ÇKDB. — d) N. pr. eines Sohnes des Manu Svårokisha Harıv. 429. eines Marut's 11545. — Vgl. चित्रः, दिताणाः, श्रुक्रः, सः, व्हिरएयः u. s. w.

द्योतिस्तह्य s. u. द्योतिष.

sयोतिस्सात् (von sयोतिस्) adv. zu Licht, in Licht; in Verb. mit कार् erhellen Buați. 9,85.

ड्योति:सामन् (ड्योतिस् + सा°) n. Bez. eines Sâman Ind. St. 3,217. ड्योति:सिद्धात (ड्योतिस् + सि°) m. Titel eines astr. Werkes Verz. d. B. H. No. 1166.

द्योतीरत (द्योतिस् → रत) m. N. pr. eines Schlangendämons VJUTP. 87 (द्योतिरत).